॥ श्री सद्‌गुरु प्रसन्न ॥

लहरी विचार प्रवाह

(हिन्दी भजन)

-० लेखक ०-

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

किमत- ७-०० रुपये

॥ श्री सद्‌गुरु प्रसन्न ॥

लहरी विचार प्रवाह

(हिन्दी भजन)

-० लेखक ०-

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

किंमत- ७-०० रुपये

लेखक व प्रकाशक

श्री. संत जैरामदास

✳

प्रबंधक–

लहरी आश्रम

मु. पो. कामठा

त. गोंदिया जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

✳

प्रकाशन तिथी २२ जुलै १९९४

✳

प्रथम आवृत्ती २०००

सर्वाधिकार प्रकाशक के स्वाधीन

पुस्तक मिलने का स्थान–

श्री लहरी आश्रम, कामठा

त. गोंदिया जि. भंडारा

✳

मुद्रक–

महेश अग्रवाल

देश प्रिंटिंग प्रेस ☎ २३९४१

कांग्रेस भोला भवन के बाजू मे,

गोंदिया – ४४१६०१

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

का म ठा

आश्रम कामठा

त. गोंदिया जि. भंडारा

–० संदेश ०–

आज समाज की प्रगति के लिए सही रास्ता नितांत आवश्यक है। क्योंकि समाज में आज हिंसाचार का तांडव फैल रहा है। इसे रोका नही गया तो समाज पथभ्रष्ट हो जायेगा। पूर्व मे समय के अनुसार भारत के महापुरुषों ने समाज को नई दिशा की ओर अग्रसर करने के लिए अपने भजन, काव्य, संगीत कथा–पुराणों के माध्यम से अज्ञानता में भूली जनता को सही राहो के तरफ प्रेरित करने का प्रयत्न करते रहे हैं। यही उनका उद्देश्य रहा। इसी मुताबिक मैने भी अपने भजनों के द्वारा सरल एवं सीधी भाषा में कवित्व रचना की है, ताकि समाज अश्लिलता के मार्ग से हट जाये क्योंकि आज गली–गली में अश्लिलता के गाने गाये जा रहे हैं। जिससे बुराइयां फैलते जा रही है। इन्ही बुराइयों से बचाने के लिए अपने विचार भजनों के माध्यम से प्रस्तुत किया हूं।

समाज के लोग इसे पढ़कर अपने गलत विचारों में सुधार करेंगे और अच्छे विचारों को अपनी कृति मे उतारकर अच्छी उन्नति करें यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

जैरामदास

-: भजन सूची :-

१. धनवान करते हैं
२. जो दया धर्म की राहों
३. राम नाम जपना
४. ज्ञान ध्यान की कदर
५. शोषण हो रहा मेरा पिछडा
६. पूरा न होवे मानवता का
७. जिंदगी एक सफर है
८. आज नही तो कल
९. तुम्हे मिलने जो भी आया
१०. सुखी करता हैं मन
११. जीवन मे प्रभू तेरा साथ
१२. सुकर्म ही मेरे जीवन के साथी
१३. सत्य कडवा होता है
१४. परिस्थिति करती हैं मजबूर
१५. ऐसा खेल है रचाया
१६. मानवता को अपनाये
१७. जीवन मे उतारो सच्चे कर्म
१८. जहां सुख शांति मिले
१९. बिगड़ी बनत बन जाई
२०. झूठ बोलने की
२१. मेरे देश की नीति
२२. जो रखे पराई आश
२३. अच्छे कर्म हमारे हैं साथी
२४. चल उठ रे मुसाफिर
२५. प्रसिद्धी छुपी सुकर्मो मे
२६. पहले संतो का संग धर
२७. दुख सुख मे किसका सुनू
२८. जिस संगत मे है हमारा हित
२९. सुने न तुमने हमारी
३०. सत कृपा से भगवन
३१. तू मेरा कन्हाई है
३२. लहरी बाबा तेरे चरणों में
३३. संत चरणो मे
३४. लोफर गुंडे लोग
३५. जब मानवता भ्रष्ट होवे
३६. आज रिति रिवाज बदल रही
३७. सही राहो पर तू चल

—: भजन सूची :—

३८. लहरी चरणो का हम
को है बल
३९. कितना सुन्दर जीवन
४०. मानवता को ऊंचा उठाओं
४१. हैं वैसे करते नही
४२. पुरखों के वचन निभाओ
४३. ठोकर खाओगे ठुकराने वाले
४४. ओ रे मनवा
४५. मित्र तू मेरा दिलवर
४६. संत संगत मे मिलते है
चारो फल
४७. गरीबों को समझे गरीबी
का दर्द
४८. गरीबों से गुजरा जो
सच्चा नर
४९. जो समय पर करता काम
५०. संत कृपा से
५१. नहीं काम की भरी
५२. परखे आत्मज्ञानी
आत्म तत्व
५३. होती किमत दुनियां मे
वचन की
५४. मानवता से करता प्यार
५५. सुकर्म नीति जो करते है
५६. समझ मे आई गद्दारी

भजन १

(चाल– संया ले गई जिया तेरी पहली नजर)

टेक– धनवान करते हैं, पैसे वालों की कदर,
सभी जीवों पर है भाई संतो की नजर

समता की है जिनकी दृष्टि
जो आपत्ति मे घिरे है कष्टि
इनके तरफ है सज्जन की उजर ॥ १ ॥

बातें छोड़ो पक्षपात की
भलाई हो सबके हित की
ज्ञान का विचार देवे तत्पर ॥ २ ॥

सज्जन का एक पर भरोसा
इंसानियत को दिये दिलासा
बानी में तत्व रखे अमर ॥ ३ ॥

वचन बड़ा है प्राणी से भी
तन से प्राण हरे कोई भी
तन लीन रखता कभी भी फिकर ॥ ४ ॥

जैराम ब्रम्ह ज्ञान मतवाला
अपना और पराया भेद भूला
किर्ती, छोड़कर, गया ऐसा नर. . . ॥ ५ ॥

*

भजन २

(चाल– है प्रीत यहां की रीत सदा)

टेक– जो दया धर्म की राहो, अपना ये फर्ज निभाता है ।
देश के वास्ते हर वक्त, मरने को तत्पर रहता हैं ।।

ऊंच नीच का भेद नही प्रेम का नाता निभाता,
चीढ़ उसे झूठी राहों की, स्वाभीमान से जीता है ।। १ ।।

कोई करे उसका मान अपमान
तनिक न उससे डरता है
सत की राह पकड़ा जिसने
कभी मौत से न घबराता है ।। २ ।।

ढलता हो गर आसमां
उसकी न कभी कोई चिंता है
रण में उतरा हैं जो वीर
पीछे न कदम हटाता है ।। ३ ।।

सभी प्राणी की भलाई का वादा
परोपकारी जीवन बिताता है
समाज में हरियाली लाना
उसका यही इरादा है... ।। ४ ।।

जैरामदास कहे धरती मां का
वही सच्चा सपूत है
हर ठिकाने विजय – २
अमर कीर्ति छोड़ जाता है ।। ५ ।।

✻

भजन ३

(चाल- तूझे भूलना तो चाहा)

टेक-- राम नाम जपना पराया माल अपना
साधू और संतो का पहने रहते बाना

सज्जन भी ढोंगी कहलाये
झूठे को न परख पाये
ऐसे ही लोग अज्ञानि का करें हर्जाना ॥ १ ॥

झूठ मूठ की चलाये बानी
छल कपट ही दिल में ठानी
कैसा धन द्रव लूटना, कैसा किसको फंसाना ॥ २ ॥

फैला है स्वारथ चारों ओर
कोई न करते इस पर गौर
मानवता का मिट रहा निशान, कैसे शांति पाना ॥ ३ ॥

विद्वानो से अर्ज है मेरी
गद्दारी से बचाओ समाज सारी
तभी होगा रामराज का साकार सपना ॥ ४ ॥

नही दिया इस तरफ किसी ने ध्यान
देश समाज का होगा पतन
जैरामदास का यही है कहना ॥ ५ ॥

*

भजन ४

(चाल- परदेशीयों से न अखियां मिलाना)

टेक- ज्ञान ध्यान की कदर करते छलिया
बुरे काम में विताये उमरिया
चमक दमक पर भूली हैं दुनिया

नकल- २ का बढ रहा जोर, अकल वाले ही रहे बोर
अश्लीलता के गीत गाये, गली गलियां ।। १ ।।

पुरखो के वचनो पर देते न ध्यान
आज्ञा पालन न करते करे अपमान
गलती कर के भी करे उजरिया ।। २ ।।

बिगड रही प्रेम की नीति
मर्यादा की हो, रही दुर्गती
अनीति की बढ़ रही बीमारियां ।। ३ ।।

कहता जैराम संत, का पथ पकड़ा
मिट गया उसका पाप, कर्म का दुखड़ा
सच्चे का साथी है, वो सांवरिया ।। ४ ।।

*

भजन ५

(चाल- लेके पहला पहला प्यार)

टेल- शोषण हो रहा है मेरा पिछड़ा समाज
भूखे रहते है बच्चे उनके, देखो आज

गुंडे लोफर हो रहे माला माल
भोले जनो को करते बेहाल
विद्वानों निकालो इनका हल
तभी तो बचेगी अपने देश की लाज ॥ १ ॥

धर्म के नाम पर, कितना पैसा लूटते
लंबी चौड़ी वो गाल बजाते
भेष साधू का बना, करते है काज ॥ २ ॥

दुनिया में फैल रही, नकल-नकल
सच्चे आदमी की गुम-गुम रही अकल
विनास की ओर, जा रहा है ये समाज ॥ ३ ॥

कहता जैराम, दुर्जन, सज्जन न परखो
वैसा उनसे व्यवहार रखो
निभावो मानवता का फर्ज, तभी मिटेगा ये मरज ॥४॥

✳

भजन ६

(चाल– कर न सके हम प्यार का वादा)

टेक– पूरा न होवे मानवता का वादा, मिटे न जब तक अज्ञानता
चाहे कितनी करे कोशिशे, जूड़े न नाता सही कर्म से

काम क्रोध आशा तृष्णा
मिटे न मन की कभी कल्पना
भ्रम– २ में उमरिया बीते
कभी न मिटे ये विपदा ।। १ ।।

विषमता से फूट पड़ी है
अपने आप हानि की है
जीवन विताये नेक नाम से
ऊखंड मिले सुख शांती सदा ।। २ ।।

जुबां पर हो दया, धर्म की बानी
अपने आपको, परखा ज्ञानी
होवे न कभी उसकी हानि
जनम मरण का मिटा फंदा ।। ३ ।।

जैरामदास कहे, अपने को परखा
बुरा न किसी को, सपने मे देखा
इंसानियत का हैं वो भूखा
वो ही है प्रभू का बदा ।। ४ ।।

*

भजन ७

(चाल– मेरे प्यार की तमन्ना गमे जिंदगी)

टेक– जिंदगी एक सफर है, सच झूठ का खबर है,
जनम–मरण, एक खबर है

अच्छे बुरे दो राहे है,
जिधर जाये उसका फल पाये,
मन वैसा ही दर्शाये,
विवेक मानवता सिखलाये . . . ॥ १ ॥

विचार बिना सच्चा ज्ञान नही,
आधार बिना व्यवहार नही,
धैर्य ही सच्चा शांति दिलाये,
तत्व ज्ञानी हुये अमर हैं ॥ २ ॥

अमर तत्व में अमर कितीं,
परखे बिना न होये उन्नति,
जाना वहीं जो सूर वीर है ।
जिंदगी ॥ ३ ॥

दुर्लभ है मानव जनम,
आये जनम कर ले जतन,
परख ले तू ही अपना वतन,
जैरामदास तुझे दर्शाये
सत्संग से मिटा ले भरम है ।
जिंदगी . . . ॥ ४ ॥

भजन ८

टेक– आज नहीं तो कल सच झूठ का मिलेगा फल

अपनी राह परखते चल यहां अपनी
कर्म भूमि है नाम इसका– २
फर्ज अदा करो मानवता का– २
उदय होगा भाग्य तुम्हारा, संतों की राहों पर चल ॥ १ ॥

ये दुनियारी है दो दिनों की
झांकी भरी है ये सपनों की
तन से हंसा निकल जायेगा
मच जायेगी हल चल ॥ २ ॥

पूर्व पूण्य से नर जन्म पाया
क्या खोया है और क्या है बचाया
ज्ञान बुद्धि का लेकर सहारा
समय न खो अनमोल ॥ ३ ॥

बनना है तुझको नर का नारायण
परख ले तू श्वांस रूपी धन
किसकी रात हैं और किसका दिन हैं
खाये मत तू भूल !... यहां अपनी ॥ ४ ॥

कहे जैराम इहलोक परलोक साध
छोड़ दे तू झूठी बकवाद
कल करने का आज ही करले
अपना अपना सफर ॥ ५ ॥

भजन ९

(चाल– तुझे भूलना तो चाहा)

टेक– तुम्हे मिलने जो भी आया
मन की मुरादे पाया
वो मेरे लहरी बाबा– २ बरसाओ सुख की छाया ।। टेक ।।

जीवन है एक सागर, जिसकी हजार दूरिया
जहां फूल है वहां कांटे, यह सब अनोखी माया
तुम ही सबके भाग्यदाता, तुम्ही सब के हो कन्हैया ।। १ ।।

तुम संग ही हमने बांधा
भक्ति का प्रेम धागा
कभी भूल हुई हमसे
अच्छे भलाई की बाते, तुमने हमे सिखाया ।। २ ।।

हो इस जहां के मालिक
पावण परम पिता श्री
पावों में पदम शोभे
हे प्रभूजी करुणाधारी
गुरुदेव जी हमारे– २ लगाओ पार नैय्या ।। ३ ।।

भजन १०

(अपना दिल हम छोड़ चले)

सुखी करता है मन ये हमारा
जिसने समझा इसका इशारा
उसकी नैया हुई भवपारा

नेक राहों पर चलते रहेंगे
समय के हर संकट हल होते जायेंगे
ज्ञान की दरिया में नहाते रहेंगे
मिटे द्वेष भाव का क्लेश हमारा ।। १ ।।

मुखड़ा देखो मन दर्पण में
नर नारायण देखो तन में
मत खोजो बन बन में
कण कण में वो हैं भरा ।। २ ।।

सुंदरता है कर्म की बेला
भाग्य का करे वही उजाला
गरीब बन जाये धनवान विचारा
जीवन बने उसका हरा भरा ।। ३ ।।

जैरामदास कहे, हल निकाला
मानवता का वो है रखवाला
इंसानियत का सच्चा तारा ।। ४ ।।

भजन ११

(चाल– जीवन मे प्रभू तेरा साथ रहे)

टेक– जीवन मे प्रभू तेरा साथ रहे
हर वक्त तेरा, याद आती रहे... जीवन में

कितनी भी कठिनाई, आये मुझ पर,
धैर्य न छुटे मेरे, मन के अंदर,
सच्चे सुख शांति का, होवे मुकद्दर,
दीन दुखियों से प्रीति जुड़ती रहे– जीवन ॥ १ ॥

मेरे मित्र बने, हर जीवन प्राणी,
द्वेष भावना, ना रहे बनी,
झूठ मूठ की, चले ना वानी,
सबका भला हो ऐसे ज्ञान की
दरिया बहती रहे... जीवन मे ॥ २ ॥

सबके हित की बाते, मेरी जुबा पर चले
अनहित न किसी का, होने पाये,
प्राण जाये पर न वचन टले,
मानवता की जोत जलती रहे... जीवन मे ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, अरज मेरी
दौडकर आना, तुम गीरधारी
लगाओ ना प्रभू, तूम देरी
कुछ ना मांगू, यही मुझे भाये... जीवन मे ॥ ४ ॥

भजन १२

(चाल– मेरा प्यार वो है)

तर्ज टेक– सुकर्म ही मेरे, जीवन के साथी
इसमे मिले मुझे, सच्ची शाश्वती

चाहे दुनिया, रुठी हो मुझ पर
भरोसा है मेरा, ईश्वर पर
जुदा न करे, किसी की शक्ति
सद्भावना की हैं मेरी भक्ति ।। १ ।।

मानवता का है मेरा संदेशा
किसी के धन दौलत की, मुझे नही आशा
सत के पथ की है, मेरी नीति
झूठी बात न, मुझको सुहाती ।। २ ।।

बंधुत्व प्रेम हो सभी जीवो का
नाता निभाये भाई चारे का
भोजन पाये अपने मेहनत का
सबको मिले, अखंड शांति ।। ३ ।।

अज्ञानी को, ज्ञान देवे
अंधकार ये, सब मिट जाये
सोये किस्मत के, जग जाये ज्योति
आये ना मन मे कभी कुमति ।। ४ ।।

जेरामदास कहे, सत पर भरोसा
क्यों करे हम, पराई आशा
दिलवर ही है, दिल का दिलासा
साधू संत है, हमारे साथी ।। ५ ।।

भजन १३

सत्य कड़वा होता हैं पर, उसके परिणाम मीठे
परखा जिसने इन शब्दों को मन की भ्रमता मिटे

सही राहों पर जो चलता है, आये कितने ही अड़ंगे
हिम्मत न हारे अपनी कभी, मिटे उलझन झगड़े
सिद्धांत का पक्का जो नर, अंत में विजय पावे ॥ १ ॥

दुष्ट कितना भी रूठे, अपने तत्व न बदले
चाहे आसमां भी ढलता ही असत्य कभी न बोले
तन की बाजी उसने लगाई चाहे प्राण भी लुटे ॥२॥

दृढ़ता का है संकल्प उसका, रखें ना डर किसी का
चिंता फिक्र तनिक न रही, मान अपमान करे कोई
सब पर ही उसका भरोसा, फल पावे वो मीठे ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे वो पहना, नेक बानी का बाना
सज्जन करे उसकी सराहना, सेवकाई का गाये गाना
अमर रहता नाम उसका, किर्ति कभी न मिटे ॥४॥

भजन १४

परिस्थिति करती है मजबूर हर पल
जिसने इसको जाना, उसका जिवन सफल हुआ

गुजरे है राहों से राम और कन्हैया
कभी धैर्य नाही छोड़े, मानव ने भैया
हरदम टकराते रहे, लेकर आत्म बल ।। १ ।।

मिटाये उन्होने, अज्ञानता को
दमन कर दूर किया दुष्ट वृत्ति को
दानवता में मचती रही. हरदम हलचल ।। २ ।।

मानव मानवता से, आज जोड़ देना है
जिवप्राणी के नस–नस मे, सुख शांति भरना है
विचार शक्ति की क्रांति का
जैराम चलाये हल..... ।। ३ ।।

भजन १५

बाजीगर ओ बाजीगर,
कारीगर ओ कारीगर,
लहरी बाबा वो कारीगर,
ओऽऽ – ऐसा खेल है रचाया,
ऐसा खेल है खिलाया,
लिया सबका तू मन मोहकर ।। टेक ।।

वाणी का जादू चलाके ।
सबके मन निर्मल बनाया ।।
ज्ञान की बरखा बरसाके ।
सबको है जीना सिखाया ।।
ममता का देकर सहारा ।
भावना मन में जगाया ।।
दुख का अंधेरा मिटाके
खुशियां भरी धूप खिलाया
ओऽऽ – सच्ची राह है दिखाया
सारे दोष है मिटाया
देखो कैसा है वो जादूगर
कारीगर ओ कारीगर... ।। १ ।।

आओ सभी मेरे भाईयो ।
आनंद के इस भवन में ।।

पुण्य की दौलत वहां ।
ले लो सभी इस जनम में ।।
प्यार की, गंगा बहे
आओ नहाये, सब मिलके ।।
ऐसा दर मिलता नही
आओ देखो वहां चलके ।।
ओऽऽ – मानवता के पुजारी
ऐसे सच्चे हितकारी
आज आये हैं वे धरती पर
कारीगर ओ कारीगर ।। ।। २ ।।

कवि
श्री मदन यादव

गायक
श्री गुणवंत जाधव
नागपुर

भजन १६

चाल– (हां तुम मुझे यूं भूला ना पाओगे)

टेक – मानवता की अपनाये नीति
देश समाज की होये उन्नति
मिले सबको, सुख और शांति

भावना प्रद हो सभी के विचार
सत्कर्मों का होवे संचार
मुरझाई कलियां, खिल जाती ।। १ ।।

क्लेश न रहे द्वेष भाव का
एक दूसरे के प्रति, होये सराहना
प्रेम भाव की रहे मति ।। २ ।।

होवे नाश विषमता का
मार्ग अपनाये सबके हित का
जैराम भूले न कभी कर्म धर्म को
न भूले कभी दीन दुखियों को
यही अपनी भारतीय संस्कृति ।। ३ ।।

भजन १७

जीवन में उतारो सच्चे कर्म
तब मिटेगा तुम्हारा भ्रम

शालीनता का मन में वास
किसी की न रखो दिल में आस
हमारे साथी है सुविचार की बानी
नादानी बरतने से होती है हानि
नेक नामी से करो श्रम ॥ १ ॥

सच झूठ का फल भाग्य से जुड़ा
जिसने इसको निहारा
सुख शांति का पाया उजाला
मिट गये सारे दुरम ॥ २ ॥

जैरामदास कहे नेकी बदी दो राहे
जिस ओर जाये वो फल पाये
विचार शक्ति हमारे साथी
हर वक्त मिले हमें सुमति
नाम छोड़ जाये अमर ॥ ३ ॥

भजन १८

दोहा – तरने के वास्ते लीनता
डूबने के वास्ते अभिमान
समझा नहीं मर्म को,
कैसे कहे इन्हे विद्वान (संत जैरामदास)

(चाल– अजब तुझे सरकार)

टेक – जहां (हमको) सुख शांति मिले वही (हमारा) तीर्थ है
(हमारा) सच्चा यही (हमारा) व्रत है
पानी और पत्थरों की सभी ठिकाने है मूर्तियां
(वहां) हर प्रकार की है वृत्तियां
सत्य का पालन करना यही जरूरत है ॥ १ ॥ हमारा

छोटी और बड़ी नदियां, समुंदर में मिल जाती है
आत्मानंद की, झरिया वहती है
ऐसे जीव मुक्त होत है ॥ २ ॥ (सच्चा)

असुरी दैनिक, दो है पहिया
अलग अलग है, इनका रवैया
परखे वही है, सच्चा खिवैय्या
(भवसागर से पार वही करत है)
भव पार करत है ॥ ३ ॥ (हमारा) ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे गुरू, (हमारा) तीरथराज
उसके बिना न सुधरे, (बिगड़े हमारे) काज
कोई लाखों करें चतुराई
कृपा बिना, (कोई) ना तरत है ॥ ४ ॥ (हमारा)

भजन १९

दोहा– लूटना है तो लूट ले, संतो की ज्ञान दरिया में
वितानी हैं उमरिया, विद्वानों की नगरिया में
जैराम कहे सुनले साधक, बिक जा तू शांति के
बजरिया में ।

टेक– बिगड़ी बनत बन जाई रे भाई
गुरु आज्ञा बिन जीवन, सफल न हो पाई
चाहे लाखों करे चतुराई

शास्त्र पढ़त उमरिया बीत जाई
होई न जीवन कभी सुखदाई
भाई...! ॥ १ ॥

कितने तीरथ, व्रत किये
मन की भ्रमणा, न मिट पाये
शांति न मिल पाई रे मेरे भाई...! ॥२॥

आसन मुद्रा ध्यान लगाये
ब्रम्हाण्ड में प्राण चढ़ाये
फिर भी क्रोध अपना, रंग दिखलाई रे भाई ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, नैया का खिवैया
वहीं हमारा जीवन तरैया
गुरु कृपा बिन रहे, जींवन दुखदाई ॥ ४ ॥

भजन २०

(चाल– दोनो ने किया था प्यार मगर)

झूठ बोलने की, न उन्हे शरम
पायें जाते हैं, कितने बेशरम
छुपाये गल्तियां, इमानदार दर्शाया
करे बुरे करम

ऐसे लोगों से हो रही फजीती
सज्जन की न हो रही इज्जत
आज चल रही है, ऐसा प्रवेश [illegible]
डूब रहा है मानव धर्म ॥ १ ॥

कुचला जा रहा है, इमानदार
उसके पीछे लगी है तकरार
दुख संकट को विरला जानें मरम
पाप बट रहा सीमा चरम ॥ २ ॥

जैराम कहे कैसा आया जमाना
सत्यवान को, न मिला चैना
पानी बहे नैना
प्रभू दूर कर उधम
पाये जाते है, कितनें बेशरम ॥ ३ ॥

*

भजन २१

(चाल– मेरे देश की धरती सोना उगले)

टेक– मेरे देश की नीति, ज्ञान सिखाती,
सबको शांति दिलाती, मेरे

अज्ञानी को वो ज्ञानी बनाये, दया धरम सिखलाती है
सत्य अहिंसा के मार्ग पे चलना, यही मंत्र गुनगुनाती है।
सभी मजहब एक राहों पर – २ द्वेष भाव मिटाती ॥ १ ॥

एकता में है सबकी भलाई, कभी न देखी किसी की बुराई
प्रेम देना प्रेम लेना, आत्मीक प्रेम दर्शाती है
अपना पराया भेद भूलाकर बंधुत्व नाता सिखाती है ॥ २ ॥

आध्यात्मीक का जीवन बने, सत्य की बानी सभी सुनें
सती संतों के आज्ञा का, निष्ठावान हर कोई बने
जैरामदास कहे मानव मंत्र से, विश्व शांति को दिलाती ॥ ३ ॥

भजन २२

(चाल- रमैय्या वता वैया)

टेक- जो रखे पराई आश, होवे न उसका विकास
किया उसने अपना घात- २

कही ना मिली, उसको सुख और शांति
मिटी न हैं कभी, उसके मन की भ्रांति
जीवन में न, किया कहीं उन्नति
तनिक है न उसमे ज्ञान की शक्ति
रोता रहता है लेके, नसीब पर हाथ ।। १ ।।

खुद पर नही, खुद का विश्वास
खोता है व्यर्थ मे, वो उमरिया श्वांस
पृथ्वी पर भार हुआ, वह मूरखदास
काम ना आया, मानवता का किया नास ।।२।।

इहलोक परलोक न इसने साधा
ऐसा जन्मा हैं यह पाजी गधा
राम नाम पर, किया न विचार
अड़ी हैं नैया बीच मझधार
ऐसा है, सुनो इनका इतिहास ।। ३ ।।

जैरामदास कहे न किसी का भला,
दुविधा मे समय बीत चला,
संगत करने से होगा घोटाला
जन्म मरण का लगे फेरा,
बैठो न इनके पास ॥ ४ ॥

दोहा :- सत्य के पथ पर चलना यही है मानवता
सही राहों पर चलना सीखाये देवता
तन छूटने पर बने तेरी गाथा
अमर पद का हो जा तू दाता
युग-युग रहे तेरी याद दास्ता

भजन २३

चाल– (मां को दुनिया का देवत समझले)

टेक– अच्छे कर्म हमारे है साथी,
इसमें भरी है, हमारी सद्‌गती,
परखे बिना मिले न शांति,

सुविचारों की होवे वृत्ति,
तभी मिटे भ्रमिष्ट बुद्धि,
सबको पसंद हो, ऐसी जुबां चला,
हो भला ऐसे, देते जा सला,
– कभी न कोई तुझको भूले,
रहे तेरी जनम जनम यादे . . . ॥ १ ॥

भले ही तुझको, कोई भूले,
तेरे तत्व को लेकर चले,
– छुटने पर तन किर्ती न ढले,
अमर रह जायेगी तेरी कीर्ति . . . ॥ २ ॥

है मुसाफिर तू चलता फिरता,
किसी के रोके न है तू रुकता,
– प्रभू के हाथ हैं तेरी सत्ता,
कथा हैं तेरी जीती जागती . . . ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे पाया नर जनम,
परखते चल तू अपना वतन,
होने न पाये तेरा पतन,
– शक्ति से बड़ी होती हैं युक्ति,
न बिगाड़े तेरी कोई संस्कृति

भजन २४

(चल उड़ जा रे पंछी)

टेक– चल उठ रे मुसाफिर तू, समझले संतो की
ये भाषा–चल,

सब जीव प्राणी को मिले सुख शांति
सुखी संसार बनाये
कमी न होये, किसी वस्तु की
जीवन सफल बन जाये,
आध्यात्मिक के ज्ञान शक्ति से,
दुख संकट मिट जाये ... ॥ १ ॥

स्वयं निर्मित है चेतन विज्ञान,
संतो के शब्दों में,
मूढ़ समझले तो ज्ञानी बन जाये,
मिले अमर तत्व में,
कितना भी वो भाग्य हीन हो,
भाग्य वान बन जाये ... ॥ २ ॥

चिंता फिक्र उसे न सताये,
ज्ञान बुद्धि सिखलाये,
दृढ़ निश्चय, अटल सिद्धांती,
त्रिताप मिट जाये,
दुख सुख न उसको व्यापे,
आप खुशियां मनाये ... ॥ ३ ॥

जैराम दास कहे, बना मतवाला,
पिकर ब्रम्ह प्याला,
वो ही गुरु और वो ही चेला,
त्रिभूवन का रखवाला,
बिरला समझे उसकी स्थिति,
सत संगत जो किये ... ॥ ४ ॥

भजन २५

(चाल- मेरा वो है)

टेक- प्रसिद्धी छुपी सुकर्मो मे ही
कहीं ना बांधे उसे कोई व्याधी

सत्य का मार्ग जिसने पकड़ा
यम से भी वो करता झगड़ा
कभी न उसका कार्य बिगड़ा
अटल सिद्धान्ती को उड़ाये न आंधी ॥ १ ॥

विश्व मे देखे विश्वनाथ को
धैर्य से हिम्मत देवे मन को
आत्माराम का गया वो शरण
परब्रम्ह का मतवाला जिद्दी ॥ २ ॥

तन मन धन न्यौ, छावर किया
राम के बिन ना कोई सुहाया
धन दौलत, उसने ठुकराया
सब जीवो का जुड़ा संबंधी ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, ऐसा मतवाला
अपना पराया, भेद वो भूला
रहता जग है वो निराला
पानी भरती, रिद्दी सिद्धी ॥ ४ ॥

भजन २६

(चाल- जिनका घर हो अयोध्या)

टेक- पहले संतो का संग धर,
तब ही होगी आत्मा उन्नत्ति,
मिलेगी तुझे सही सुख शांति

क्यों भूल रहा, इस माया जगत में
यहां न कोई तेरा भाई
व्यर्थ ही उमर गमा रहा
जीवन की कर रहा मांटी ॥ १ ॥

पूर्व पूण्य से नर जन्म पाया
इस तरफ तुने ध्यान न दिया
धर्म कर्म को तू भूल रहा
अज्ञान निद्रा मे सो रहा
छोड़ दे अब तू झूठी भ्रांति ॥ २ ॥

अमोल किमत का एक- २ श्वांस
इस पर रख सहीं विश्वास
इस मे ही मिले तुझे दिलासा
पगले मत बन माया का दासा
प्रभू पाने की देख संस्कृति ॥ ३ ॥

क्षण भंगूर, है यह जगत
छोड़ दे तू झूठी आस
परख ले अपने हित को
सुकर्म का गा ले गीत
मानव की यही है ख्याति ।। ४ ।।

जैरामदास कहे जैसा करता,
वैसा ही फल पाता
कोई किसी का साथी नही है
अच्छा बुरा देखता विधाता
परख ले अमर ज्योति ।। ५ ।।

भजन २७

(चाल- देख री यशोदा मैया तेरा ये कन्हैया)

टेक- दुख सुख मे किसका सुनू, कर्म की गतियां,
किया वैसा पायेगा, विधि का लिखिया,
ओ सुनो भैया, धर्म नितियां

करनी जो जैसा करता, फल वैसा पाता
वैसा ही वो भोगता, चुके ना किसी को
चाहे वो देवी देवता हो, जैसे करे कृतियां ।। १ ।।

धरती पर जो जन्म लिया, .
अपना हित अनहित न परख पाया
समय व्यर्थ खोया, दुविधा मे गया
कर्म अपना नही परखा, हुई दुर्गतियां ।। २ ।।

अच्छा करा परखा राही
जीवन किया उसने सुखदायी
निति नियम से काल वो डरता
सत्य वान अमर होता
जैरामदास कहे, पार हुई उसकी नैया ।। ३ ।।

भजन २८

(चाल– तू ने छोड दिया रे मेरा साथ)

टेक– जिस संगत में है हमारा हित
उससे जोड़ो अपनी प्रीत
तभी होगी तुम्हारी जीत

साथी है राहों पर अच्छे बुरे
परखत चल वादे होवे पूरे
गफलत मे तू मत भूले
होगा तेरा रे अनहित ॥ १ ॥

स्वार्थियो का मेला, जहां वहां
अपने ही वो गाल बजाये
मतलब का ही गाये गाना
ऐसे ही ढोंगी मिलते मित ॥ २ ॥

किसको कहना अपना पराया
दिल जब ढूंढा है उनका
अपने आप ही वो कतराये
बुराई का गाये वो गीत ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे बिना सोचे बुझे
करो न तुम कोई संगत
नहीं समझे तो होगी बुरी गत
आंखो पानी आयेगा नीत ॥ ४ ॥

भजन २९

(चाल- परदेसीयों से न अंखिया मिलाना)

टेक- सुने न तुमने हमारी कोई बतिया
चले लेकर कैसे तुम्हारी नितियां
पटे न तुम्हरी बाते, हम करे नफरतियां

जब तक तत्व बानी का, जुडे न मेल
दुविधा का है तुम्हारा खेल
हमे कैसे शांति मिले, सुने उजरिया ॥ १ ॥

माया के तरफ है, तुम्हारा मुख
कैसे मिले हमको सुख
अनिती की भूख करी, तुम्हारी रीतियां ॥ २ ॥

धोखा- २ हर वक्त पाया
कितना दुए सरपे आया
भोलेपन का उठाया फायदा, कई खाया ठोकरिया ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, सत का पंथ पकड़ा
सब जीव प्राणी ने राम को देखा
मानव मित्रता रखा पाया परम गतियां ॥ ४ ॥

भजन ३०

(चाल– घुंघट की आड़ से दिलवर का)

टेक– संत कृपा से भगवन का, दीदार यकी में होता हैं
जब तक न पड़े गुरु की नजर, उद्धार अधूरा रहता है

जन्मों– २ तक भटका, मानव तन मिला
कैसे पाऊं तुम्हे जीवन बिरथा चला
जकड़ती ही जाये माया मोह की ये झंझटे हो
सत्कर्मों के अभाव में, वैराग्य अधूरा रहता है ।। १ ।।

नाना यत्न करे फिर भी दिखे न ज्योति
कैसे पाये जीव, सुख और शांति
मन में कल्प और विकल्प उठते ही जाते हैं
भक्ति भाव के अभाव में, परमार्थ अधूरा रहता है ।। २ ।।

कहता जैराम प्रभू नैनों को है तारा
सब में रहकर भी है वो सबसे न्यारा
जन्म मरण छूट गया, मिल गया निज स्वरुप हो
गुरु आज्ञा के अभाव में, सत्संग अधूरा रहता है ।। ३ ।।

भजन ३१

(चाल- तू मेरी जिंदगी है)

टेक- तू मेरा कन्हाई है- २
तू ही लहरी, तू ही सांई, तू ही सुखदाई है

भक्तों का रखवाला है तू
दुखियों की करुण पुकार है तू
तू ही मेरा अपना साथी,
बाकीं दुखदायी है ॥ १ ॥

सच्चे को हैं तेरा साथ
झूठे से न करते बात
दानव को मानव बनाया
करता है भलाई ... तू ॥ २ ॥

दीखता हैं तू भोला भाला
तेरा खेल है, अजब निराला
दिल में रहकर भी,
रहता विदेही ... तू ॥ ३ ॥

तेरी कृपा से तुझको पाऊ
तेरे वचनों पर मर-मर जांऊ
तुझसे बड़ा न कोई
जाने पीर पराई ॥ ४ ॥

भजन ३२

(चाल– जुबा जुबा पर होगी तेरी मेरी प्रेम कहानी)

टेक– लहरी बाबा तेरे चरणों में,
मिले सुख और शांति
दया करना मुझ पर ऐसी,
युग– २ तक रहे प्रीति

कितनी मुसीबत आई मुझ पर
दर-दर की खाई ठोकर
किसी का ना मिला सहारा
जब तक रहा तुझ से बेखबर
दुख ही दुख मिला है, सब स्वार्थ के साथी ।। १ ।।

तेरी राहे मुझ को भायी
विपदा सारी खत्म हुई
दुनियां की झझट न रही
तुम्ही मेरे, कृष्ण कन्हाई
अपना पराया छूट गया
जुड़ गई नीति से प्रीति ।। २ ।।

कण २ में मैं देखूं तुझे
तेरे सिवा न कोई भाता मुझे
कभी क्रोध, कभी प्रेम करे
फिर भी वादे, पूरे करे
कर दो पार नैया मेरी
देके अपनी भक्ति ।। ३ ।।

भजन ३३

(चाल– तुम से मिलने को दिल करता हैं)

टेक– संत चरणों में ही रहना रे बाबा
सुख शांति मिले, जीवन सफल करना
लहरी नाम भजते ही रहना

लाखो जन्मों के पुण्यों से नर तन मिला
भज लो हरि नाम जीवन में होगा भला-- २
स्वास व्यर्थ में न खोना रे बाबा
लहरी नाम ॥ १ ॥

इस जगत में तुम्हारा कोई नही
संत वचनों में ही है भलाई तुम्हारी
सब जीवों की दया लेना
लहरी... ॥ २ ॥

संत ही होते हैं, जगत जननी
होनी को भी कर सकते है अन होनी
गुरु वचनो में मरना मीटना रे बाबा
लहरी... ॥ ३ ॥

कहता जैराम संतों का ले लो आधार
मानव मंदिर का कर लो जीर्ण उद्धार
इसानियत की रक्षा करना रे बाबा
लहरी नाम... ॥ ४ ॥

*

भजन ३४ (स्वतंत्र)

टेक– लोफर गुंडे लोग आज भोले,
लोगों को करते परेशान
इनकी जगत मे बढ़ रही शान
सज्जन का करते अपमान

फैल रही जहां वहां अनीति
भ्रष्ट हो रही मानव नीति
पाप पुण्य का विचार न मन में
हो रही दुर्गति
गरीब हो गये है हैरान ।। १ ।।

जहां वहां स्वार्थ का मेला
झगड़े तूफान का बढ़ रहा झमेला
हिंसाचार की बढ़ रही बेला
बे कसूर की जा रही जान ।। २ ।।

छोटे न करते बड़ो की कदर
गलती करके ही करते उजर
परधन पर वो रखते है नजर
कैसा खेल है अजब भगवान ।। ३ ।।

जैरामदास कहे फैले ढोंगी
अपने पेट की बजाये पोंगी
सत्यवान के बिरले संगी
दर दर ठोकर खाये विद्वान ।। ४ ।।

भजन ३५

(चाल– हो जब–२ प्यार पे पहरा हुआ है)

टेक– हो जब जब मानवता भ्रष्ट होये
जीव को शांति न मिल पाये
निसर्ग साथ न देवे - हो ऽऽ
अधित घटना घटती रहे
पृथ्वी पर संत आये -- हो ऽऽ

विधि का लिखा कभी न मिट पाये
जैसा बोये, वैसा उगे
भगवान को भाये, कर्म फल देवे
कोई भी छूट न पायेगा-- २
कितना भी वो छुपायें
जीव को न शांति मिल पाये – हो ।। १ ।।

अनिति का होये, हर दम बोल बाला
सच्चे के मुंह को लगे ताला
किसे न किसी की रहम
भ्रम में जाये जीवन
शांति कहीं न पायेगा
दुविधा में समय विताये – हो
अहंकार मिट जाये
जीव को ।। २ ।।

जैरामदास कहे, संतो से जोड़ा नाता
उसका साथी है विधाता
किर्ती छोड़ जाता, युग– २ जिंदा रहता
कहीं न पड़ती कमतरता
अज्ञानता को मिटाये – हो ऽऽ
वो ज्ञान सबको सिखाये
अमिट तत्व छोड़ जाये–
हो ऽऽ जब जब ॥ ३ ॥

भजन ३६

(चाल– राम तेरी गंगा मैली हो गई)

टेक– हो आज रिति रिवाज बदल रही बुरे कर्मं देख देख के
हो ऽऽ देख के अनिति हो ऽऽ – २
माहूल, सज्जन रोते रोते

कर्म धर्म को लगा बट्टा, खेल रहे जुआ सट्टा
सज्जन आदमी, हो रहा लुच्चा, दुर्जन कर रहे पिछा
सच्चा हो रहा खराब, दर दर की ठोकर खाई
हो आज रीति रिवाज . . . ॥ १ ॥

दुख ही दुख है चारो ओर, बढ़ रहा पाप घनघोर
हिंसाचार का हो रहा बोल बाला, इमान जा रहा कुचला
अज्ञानी भोला रो रहा बिचारा, देता न कोई सहारा
मेहनत की करे कमाई, उसकी बुरी गति आई
निसर्ग छोड़ रहा साथ, तकरार बढ़ रही ॥ २ ॥

चिंता में पड़े मानव प्राणी, रोग राई से हो रही हानी
दानवता की चल रही बानी, ज्ञानी हो के बने अज्ञानी
रहम न किसी की रही, दुनियां पतन में जा रही
कहता जैरामदास, सतयुग बिरला देख पाये ॥ ३ ॥

*

भजन ३७

(चाल- कौव्वाली)

टेक- सही राहो पर तू चल
न कर मन को हल चल,
होगा तेरा जीवन सफल...होगा...

छोड़ कीर्ति यहां से जाना
तेरा ही तुझ को है पाना
आयेगा भगवन का परवाना
अच्छे बुरे का फल है पाना- २
बुरी राहें अब तू भूल... सही ॥ १ ॥

तन मिला है, मानव का- हो ऽ
करम करता है, दानव का
परखता नही सुख और दुख
छणिक सुख से मिटती न भूख- २
उमरिया तेरी जा रही ढल... सही ॥ २ ॥

अरे तू माटी का है पुतला
अकडते ऐसा क्यों चला
देख ले तू अपना भला
संतो से ले ले सला- २
खोज ले तू निवारण हल ... सही ॥ ३ ॥

मन में भरी है गद्दारी- हो ऽऽ
बता रहा अपनी होशियारी
एक दिन खुल जायेगी पोल- हो
मीठा सबसे तू बोल- २
जैराम कहे सत्साथी हर पल सही... ॥ ४ ॥

भजन ३८

(चाल– बहुत प्यार करते है तुम से)

टेक– लहरी चरणों का हमको है बल
ले लो सहारा जीवन होगा सफल

मुसीबत कितनी चाहे, हम पर आये,
तेरा नाम लेते, पल में मिट जाये,
नाम प्रताप ऐसा, डरता है काल... ॥ १ ॥

संसार सागर बड़ा ही कठिन है,
करोगे पार भव से, हमको यकीं है,
विश्वास तुम पर, हमारा अटल... ॥ २ ॥

चारों तरफ हैं, असुरों का राज
करने न देते, परमार्थ के काज
तेरे भरोसे हम, होगें निहाल ॥ ३ ॥

जिम्मेदारी सबकी, अपने सर लेते
प्रपंच परमार्थ सबका, सुखी बनाते
झूठी राहों से हमको बचाते हर पल ॥ ४ ॥

दे के सहारा हमको, अपना बनाये ।
तुम्हारे सिवा हमको, कोई न भाये ॥
आर्शीवाद दो ऐसा, जीवन हो उज्जवल ॥ ५ ॥

भजन ३९

(कितना हसीना चेहरा)

चाल- कितना सुंदर जीवन, मिला है मानवतन
मिला है मानवतन, उसमे रहता भगवन
संत चरण जाना होगा छुड़ाने भवबंधन

कितनी उमरिया बीत गई
मुख में हरी का नाम नही
द्वेष भावना, मिटी नही
कैसे मिले कृष्ण कन्हाई,
सत्कर्म जो करता, प्रभू को वो नर भाता
प्रभू को वो नर भाता निभाता उसका वचन
संतो ने बनाया देखो दानव को इंसान ।। १ ।।

सत्य वचन में रमता राम,
झूठे वचन से, होता पाप,
निरखे जब, आप में आप
मिट जाता है त्रिताप
दया प्रेम की वाणी, करे जो अच्छी करणी
करें जो अच्छी करणी, मिलता है पद निर्वाण
संत वचन में छुपा है, मानव का कल्याण ।। २ ।।

पापी वाल्या, बना वाल्मिकी
संत संग से भ्रमणा मिटी,
जग मे रही उसकी कीर्ति,
संत चरण जो जाता, वो नरनारायण बनता
वो नारायण बनता, होता उसका पूजन
संत कृपा से राम और कृष्ण, हो गये भगवान ।। ३ ।।

भजन ४०

(चाल- कर्मों में सुंदरता)

टेक- मानवता को ऊंचा उठाओ, तभी सच्चा सुख पाओ
यही नारा अमल में लाओ, धर्म निति अपनाओ

भक्ति पंथ यही महान, धर्म निति से चलते रहे
एक दुजे से मित्रता रखकर, सुख दुःख में साथ देते रहे,
ऐसी भावना सबमें जगाकर, यहि नाता निभाओ ॥ १ ॥

जितना समझे उतना बोलो, तभी बोल का होगा मोल,
व्यर्थ की जुबा ना खोले, नही तो होगा बोल का फोल,
चूप रहना उससे अच्छा, व्यर्थ समय न गमाओ ॥ २ ॥

कर्म है सबके न्यारे- २, परखे बिन न उजियारे,
जैसे नाना जेवर सुन्ने के, वैसे उसके तेवरे,
इंसानियत ही सच्ची निशानी, व्यवहार को सुधारो ॥ ३ ॥

जैराम कहे सद्‌गुण ही जात,
ना किसी से पक्षपात।
जड़ चेतन मे एक ही सार,
मानव २ से करले प्यार।
पंथ बाजी मे कोई न भूले,
उसको हरदम ठुकराओ ······कर्मों·· ॥ ४ ॥

भजन ४१

(चाल- मुजरिम)

टेक- है वैसे करते नही, मूंह के वड़े है लबाड़
इसीलिए मानवता का हो रहा बट्याधार

करनी और कथनी में, वहुत बड़ा है अंतर
झुठ मूठ की जाल बनाकर, भूल भूलैया का देते मंतर
ऐसे लोगों से देश और,
समाज में हो रही गड़बड़ · · ·कहते- ॥ १ ॥

समता राज का है ये सपना, साकार हमको है करना,
गरीब और अमीर, एकता से हमको है चलना,
अपना जीवन सुखमय करो,
छोड़ो लंबी चौड़ी वड़बड़ · · ·कहते- ॥ २ ॥

अज्ञानी को ज्ञान देना, विद्वीनों का है काम,
दया धर्म की राह बताना, इसमें मिले सम्मान,
सतयुग का हर इंतजार करे,
समता से अब नाता जोड़ · · ·कहते- ॥ ३ ॥

कहे दास जैराम भारतवासियों, सावधान अब, तुम हो जाओ,
दीन दुखियों को गले लगाओ, तभी सच्ची सुख शांति पाओ,
इसमें तुम्हारी भलाई है,
सत्कर्मों से नाता जोड़ · · ·कहते- ॥ ४ ॥

भजन ४२

(चाल– देश प्रेमी)

टेक– पुरखों के वचन निभाओ
सही राहो पे जीना सीखो
अपनी मेहनत पर जीओं
मेरे विश्व के प्रेमियों. . .ऽ
मेरे विश्व प्रेमियों जिम्मेदारी निभाओ

साथ, जो देता समय पर
उसको समझो माता पिता. . .
उसका वचन न कभी भूलो
यही सच्ची हैं मानवता
हिल मिल कर तुम चलना सीखो
सबकी भलाई दिल में रखो
अमर किर्ती छोड़ो ऐसी, यादगारी रखो
काम राम का नाता जोड़ो. . . मेरे ॥ १ ॥

छोड़ो झूठे सपने, आयुष्य
न गमाओ अपने,
अमोल, जीवन को, बर्बाद न तुम करो
भाई–चारे का नाता जोड़ो
किसी का दिल न तोड़ो
सत्कर्म में मर्म छुपा है
जैसे दूध में घी हैं
मित्रो परखकर चलो. . . मेरे ॥ २ ॥

कहे, जैरामदास, दया, धरम रखो पास
हृदय में होये, नम्रता का वास,
चारो ओर बिखरेगे
किर्ती उसकी ये महान
तन मन धन को करो अर्पण
दृढ़ हो संकल्प तुम्हारा
समाज के वास्ते मरो... मेरे ॥ ३ ॥

भजन ४३

(हर करम अपना करेगें)

टेक– ठोकर खाओगे ठुकराने वाले,
ऐ गर्व गुमान वाले– २
ना करो किसी की बुराई,
जीव प्राणी की दया ले ले . . .ठोकर

मालिक हमारा है एक
काम करेंगे हम नेक
रुप है उसके अनेक
पूरा करो अपना वादा
ए इसा कहलाने वाले,
इसानियत न भूले . . . . . ठोकर ॥ १ ॥

वो ही तीरथ है, वो ही इंसाफ है
कहां भटक रहा पगले
मत लगा फंदे गले
तू ही कर्म है, तू ही धरम है
परखे बिन तू है अनजाना
पराया दुख तूने न जाना
मरना मिटना खेल है तन का
ऐ मूर्ख छोड झूठी चाले . . . ठोकर ॥ २ ॥

जन्म लेकर धरती पर आया
क्या खोया और क्या पाया
आत्म तत्व तूने न परखा
आवागमन न तेरा चूका
परख ले अपनी गल्तियां
ऐ अब तू रे पगले . . . . . ठोकर ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे सुख शांति है पाना
इहलोक है मुसाफिर खाना
है चिड़िया अब रैन बसेरा
सांप को पकड़े जैसा सपेरा
ऐसा खेल है रे तेरा
ऐ मानव कहलाने वाले. . . ठोकर ॥ ४ ॥

भजन ४४

(चाल– आ जा रसिया)

(विचार शक्ति ज्ञान शक्ति से वड़ी है)

टेक- ओ रे मनवा– २ संतो के वचनो पर
चल होगा जीवन सफल
धर्म अर्थ काम मोक्ष मिलेगें चारों कल
अमर कीर्ति तेरी रहेगी
भारत भू के छोरे, लगा जय हिंद के नारे
कर ले जीवन नैया पार, ले ले संत चरण का बल
ओ रे मनवा . . . ॥ १ ॥

शील नम्रता के भाव रख मन मे
रखना ख्याल ये अपना वतन
धर्म नीति का कर ले जतन
जप हरी नाम तेरे संकट होंगे हल– २
ओ रे मनवा . . . ॥ २ ॥

यहां जन्म लेकर आया बंदे
छाड़ दे तू झूठ मूठ के धधे
दीन दुखियों को लगा ले कंधे
प्रेम की बोली अब तू बोल– २
ओ रे मनवा . . . ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे शांति की खबर
अहिंसा परम धरम का तेरा नारा
सुखमय होये सभी के जीवन
होगा समाज तेरा उज्जवल– २
ओ रे मनवा . . . ॥ ४ ॥

भजन ४५

(तेरी दुनिया से दूर)

मित्र तू मेरा दिलवर,
जीवन हैं तेरे बल पर
दिजिए प्रभू ऐसा वर
है तमन्ना ऐ मेरी, न सताये कभी
मुझे चिंता फिकर

ऐसी मेरी आशा, दे मुझे दिलासा, न भूलू मानवता
न हो किसी की हरकत, सबको मिले बरकत, यही मेरी इच्छा– २
एकता की भावना, सुखी होवे जीवन, मिले शांति की खबर
है तमन्ना ये मेरी . . . मित्र ॥ १ ॥

सबसे होये प्रीति, आये सत्कर्मों की नीति ! व्यवहार रहे प्रगति
आये न मन में कभी गंदे विचार भरा रहे सदाचार– २
जीवन नैया होये पार सत्सग का मिले सार
सग बना रहे गुरुवर
है तमन्ना ये मेरी . . . मित्र ॥ २ ॥

कोई नही साथी है मुझको मिला सारा विश्व ढूंढ़ा
तेरे विना दूजा न कोई मुझको इस जग में दिखा– ३
विते भ्रम मे उमर, आयुष्य जा रहा पल– २
है तमन्ना . . . . ॥ ३ ॥

दास जैराम कहे, अजब तेरा है खेल निराला
पृथ्वी जल पवन आकाश अग्नि में, तू ही तू भरा– ३
कैसा रखा तूने अंतर, सबका तू ही एक मंतर
माया सब तेरी दिगम्बर
है तमन्ना . . . . ॥ ४ ॥

भजन ४६

(चाल- तुझे न देखू तो चैन आता नही)

टेक- संत संगत मे मिलते हैं चारो फल
कर लो भाई अपना जीवन सफल
होवे न मन कभी हल चल-

कितना भी होवे अभागा
तकदीर उसका तभी जागा
कर्महीन बन जाये भागवान
बन जाये मूर्ख भी ज्ञानवान
संत है रेख के उपर मेख
सत्यवान भी बच गया भक्ति के बल- २
होवे . . . ॥ १ ॥

कितनी पापिनी वेश्या गनिका
वाल्या ने राम नाम उच्चारा
पाप मिट गया उसके मनका
जीवन नैया लगी किनारा
ऐसी संत संगत की हैं महिमा
कठिनाई से पापी होता हल
होवे . . . ॥ २ ॥

कर्म जुडा है धर्म से
पालन करे जो निति नियम से
काल उसे कभी न बांधे
साधक वाचा मनसा साधे
त्रिताप से वो छुट जाये
अंतर आत्मा के है ये बोल- २
होवे . . . ॥ ३ ॥

जेरामदास कहे दृढ़ता पर विश्वास
शास्त्र पुराण का यही इतिहास
भेदिया भेद को जाने
हुआ उसका जीवन उज्जवल
होवे . . . ॥ ४ ॥

भजन ४७

(परम पूज्य श्री संत लहरी बाबा की आत्मकथा)

टेक– गरीबों को समझे गरीबी का दर्द
मिटाते है उनके वे ही मर्ज . . . गरीबों

न खाने को अन्न है, न रहने को घर
भटकते है रहते ये दर दर
मुसीबत है बीती जिन पर ऐसी– २
ये ही मिटाते है इनका कर्ज . . . गरीबों ॥ १ ॥

भोगा है जिसने ऐसी सजा
कर्मयोग से बन गया हैं राजा
भूलता नही अपनी बीती बाते– २
सुनता है उनकी वो ही अर्ज . . . गरीबों ॥ २ ॥

पर दुख उनका जिन्होने जाना
अपने पर से दुनिया को पहिचाना
उसे समदृष्टा समाज सेवक कहना– २
भटकते हुये का बनाया कारज . . . गरीबों ॥ ३ ॥

कहता जैराम सच्चा वही गुणवान
वक्त आने पर अपना देता है प्राण
भरोसा रखो उनके वचनों का– २
वो ही दुनिया का इक है,
सच्चा मर्द . . . गरीबों ॥ ४ ॥

भजन ४८

(अमीरों की शान)

दोहा– गरीबी से गुजरा जो सच्चा नर
दिल मे रखकर इमानदारी
कितना भी सकट आये
चलता है धैर्य रखकर

टेक– गरीबों की मेहनत से जगता वतन
भूलो न कभी धनवान गुणवान

उनका ही देखो आज हो रहा बेहाल
न पेट भर खाते, न मिलता आटा दाल
यहां झूठे मूठे इन पे डालते है जाल– २
जर–जर हो गया, देखो इनका तन ॥ १ ॥

तडपते है रहते बीबां और बच्चे
मेहनत पर पलते उनकी, है कई लुच्चे
पल रहे हैं कितने निठल्ले दलाल– २
कहां छुप गये आओ मेरे भगवान ॥ २ ॥

आज लग रही हैं सच्चे को फांसी
अन्यायियों को आ रही है हँसी
इमानदार का हो रहा है हलाल– २
मानवता का हो रहा पतन... गरीबों ॥ ३ ॥

कहता जैराम कर्म धर्म डूब रहा
बुरी गंदगी में समाज बह रहा
अन्याय से बचाओ भोली जनता– २
नही दिये ध्यान, तो होगा पतन... गरीबों ॥ ४ ॥

*

भजन ४९

(तर्ज– कस्मे वादे प्यार वफा सब)

टेक– जो समय पर करता काम
उसका तुम करना सम्मान
वो ही समझो है भगवान

संबंध जोड़ो मानवता से
इर्ष्या न रखो जाति, पाती से
वचन न जिसने अपना टाला
वो ही है अपना रखवाला– २
वो ही है सच्चा इंसान...जो ॥ १ ॥

अपने पटते हो जिनको विचार
करते जा उससे व्यवहार
उसका करो हर वक्त सम्मान...जो ॥२॥

जिससे जुड़ते हो अपने तत्व
उससे जोड़ो प्रेम बंधुत्व– २
जैरामदास कहता अपना विचार ... जो ॥ ३ ॥

भजन ५०

(घूंघट की आड)

टेक- संत कृपा से भगवन का
दीदार यकी में होता है...
जब तक न पड़े गुरु की नजर
उद्धार अधूरा रहता है...

जन्मों - २ तक भटका फिर मानव तन मिला
कैसे पाऊं तुम्हे जीवन बिरथा चला
जकड़ती ही जाये माया मोह की झंझटे हो...
सत्कर्मोंके अभाव में, वैराग्य अधूरा रहता है
जब तक ..... ॥ १ ॥

नाना यत्न करे फिर भी दिखे न ज्योति
कैसे पाये जीव सुख और शांति
मन में कल्प और विकल्प उठते ही जाते हैं...
भक्ति भाव के अभाव मे परमार्थ अधूरा
रहता है ..... ॥ २ ॥

कहता जेरामदास प्रभू नैनो का है तारा
सब में रहकर भी है वो
सबसे न्यारा... जन्म मरण छूट
गया मिल गया निज स्वरुप हो...
गुरु आज्ञा के अभाव मे... सत्संग अधूरा
रहता है ... संत ॥ ३ ॥

भजन ५१

(चाल- स्वतंत्र)

टेक- नहीं काम की भरी दया
न सुख जीवन में पाया
यहां वहां ठोकर खाया

सत्य असत्य को परखा ना जिसने
झूठ-मूठ को भी समझा अपने
राम नाम लगा है जपने
अपने विचार का परख न किया ।। १ ।।

वह भूला है माया ममता
अंधकार मे जीवन बीता
समझा नहीं सत्य का रास्ता
क्षिण हो गई उसकी काया ।। २ ।।

बैरंग जगत से नाता जोड़ा
अंतरात्मा का नाता तोड़ा
अपने को आप है वो भूला
इहलोक परलोक का सुख न पाया ।। ३ ।।

जैरामदास कहे प्रपंच में पड़ा बाधा
प्रपंच कैसा होवे सीधा
ज्ञानी रहा वो आधा
दोनो तरफ से वो गया...नही ।। ४ ।।

*

भजन ५२

(स्वतंत्र)

परखे आत्मज्ञानी आत्म तत्व
जीवन का यही है सच्चा महत्व

पाया अखंड शांति
निकली उसकी भ्रांति
करे न दोस्ती वो किसी की
बुराई न करे वो किसी की
पालन किया अपना कर्तव्य... ॥ १ ॥

भरोसा उसका आत्माराम पर
रखता न भरोसा तन और मन पर
तत्व किसी ने आदीत्व
बना वो ब्रम्ह बोधिष्ट
लूट न सके उसे कोई दुष्ट
वो ही पद पाया देवत्व... परखे ॥ २ ॥

जैंरामदास कहे पाया सच्चा साथ
दुनिया में किया अपना विकास
वही है सच्चा भाग्यवंत
निभाया उसने अपना व्रत ॥ ३ ॥

भजन ५३

(स्वतंत्र)

टेक– होती किमत दुनियां में वचन की
सुंदरता है वो मानवता की

नीति से वो जोड़ा नाता
न्याय को माना अपना पिता
जाति मे भरी है पक्षपाती
माया की है उनकी नीति
प्यास न बुझी उनके मन की ॥ १ ॥

मतलब के हैं भाई भतीजा
संकट समय में उल्टा नतीजा
कोई न दौड़े अपने काजा
तब याद आती है वतन की... ॥२॥

सत्यवान अपने, सत्यता पर अटल
काल का न रखता कभी वो डर
कथा सत्यवान सावित्री की
कीर्ति रहती सुकर्म की
रक्षा किया अपने धरम की... ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे प्राण से बड़ा
निभाया जिसने दुखियों का दुखड़ा
कदर किया जिसने रतन की... ॥४॥

भजन ५४

(मेरी दोस्ती मेरा प्यार)

टेक– मानवता से करता प्यार
उसकी किसी से न तकरार
वही है समाज का सरदार

सज्जनता से उसका नाता
प्रेम की वाते सबसे बोलता
बलबुते पर अपने जीता
किया उसने अपना उद्धार... मानवता से ॥ १ ॥

कार्य की फिकर रखता अपने
देखा न किसी के वुरे सपने
भेद न रखता पराये अपने
ऐसा करे वो व्यवहार.. मानवता से ॥२॥

अपने काम से काम रखता
उससे ही अपना जीवन बिताता
उसमे ही सुख शांति पाता
उसमे उसका लेता सार ॥ ३ ॥

अपने हित की रखे चिंता
नैय्या पार होवे कैसी भगवंता
करता है इसका हरदम बीचार
नैय्या अड़ी है मझदार ॥ ४ ॥

जैंरामदास कहे भलाई से प्रीति
ऐसे लोग है मेरे साथी
ऐसी मेरी है हस्ती
यही मेरा है श्रृंगार... मानवता से ॥ ५ ॥

भजन ५५

(जय माता दी)

दोहा– सुकर्म नीति जो करते हैं
उनके लिए प्रभू, दौड़े आते हैं
वचन न खाली होने देते हैं
सेवकाई का नाता निभाते हैं

टेक– जय मानव की . . . ऽऽऽऽ–
धर्म नीति से चलना है, देश की रक्षा करना है
होऽऽ मातृ भूमि के सपूतों, नाता यही निभाना है...

तन छुटने पर कीर्ति रहेगी
यादगारी दुनिया मे रह जायेगी
क्षण भंगूर है, काया तेरी
बिताता उमरिया, मेरी मेरी
हो ऽऽ इस धरती पर राजा फकीर
सब को इक दिन जाना है. . . ॥ १ ॥

कर्म क्षेत्र परखते चलो, सत्य कर्म को कभी न भूलो
सबके हित की बाते बोलो, माया ममता मे न डोलो
हो ऽऽ बड़ी कठिन हैं मंजिल की राहे
इसको पूरी करना है. . . धरम. . . ॥ २ ॥

जन्म लेकर इस, धरती पे आये
कार्य अपने, निभाते जाये
समय न अपना भूल पाये
वक्त का इंतजार, करता रहे
हो ऽऽ मानव मानवता से मिलकर
इहलोक से परलोक जाना है. . . ॥ ३ ॥

हम भी तो एक, मुसाफिर है
सफर करने को आये हैं
कुछ देना हैं कुछ लेना है
हमें नर से नारायण बनना हैं- २ ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे करनी का फल
सही राहो से होता हल,
आत्माज्ञान का जिसे है बल
उसका जीवन हुआ उज्जवल
हो ऽ इसानियत के इंसाफ से,
परधाम हमे पाना है. . . निति
प्रेम से बोलो जय मानव की
हो सारे बोलो जय मानव की
हो मिलकर बोलो जय मानव की, जय मानव की ॥ ५ ॥

भजन ५६

(तर्ज– दिवानो का ढोल)

(लहरी बाबा को सताने वालो की कथा)

टेक– समझ मे आई गद्दारी
छल कपट की नीति तुम्हारी
हम निभाये तुम से प्रेम की वतियां
तुम करते मक्कारी

तुम कब न हमे मरवा दे
अनीति के तुम्हारे इरादे
हम है भोले सीधे साधे
सत्कर्म के हमारे वादे, जुबां तुम्हारी विषेली ॥ १ ॥

मीठी--मीठी बातें बोले
बोले वैसा नही चलते
मन के हो तुम काले
एक दिन तुम्हारी पोल खुलेगी
प्रभू करे दुष्ट संहारी ॥ २ ॥

धन द्रव्य का घमंड तुम्हारा
न दया धर्म का मार्ग तुम्हारा
तुम्हारी करनी से सज्जन रोता बेचारा
पतन होगी तुम्हारी, ये सारी व्यभिचारी ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे ऐसे नर का
नही है इहलोक परलोक
ऐसा नर रहता, घर का घाट का
फिर नरक की तैयारी ॥ ४ ॥

-० संदेश ०-

गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर
संत श्री जैरामदास उर्फ (लहरी बाबा) का
मानवता का संदेश शुभेच्छा के साथ

दिनांक २२-७-९४

(चाल- अमीरो को शान गरीबों के नाम)

टेक- इंसान के पास ही है इंसाफ
तन छूटने पर रहता इतिहास
मानवता की वो करता कदर
न्याय नीति की सुनता है उजर
होवे गरीब, धनी या ज्ञानी
किसी से न रखता कभी पक्षपात ॥ १ ॥
सुकर्म से उसकी जुड़ी नीति
नीच ऊंच की न कभी देखा जाति
सब जीव प्राणी की होये उन्नति
ये ही तो है उसका विकास ॥ २ ॥
किसी को न दुख पहुंचे ऐसा करे व्यवहार
अज्ञानी भी ज्ञानी बने यही है विचार
सत्कर्मों का सिखाये भाईचारा
आत्मज्ञान पर रखे विश्वास ॥ ३ ॥
कहता जैराम करनी का फल
नर ही बनता नारायण
दुनिया है करती उसको नमन
सबके हृदय मे उसका वास ॥ ४ ॥